शोधामृत

(कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका)

ISSN : 3048-9296 (Online)
3049-2890 (Print)
IIFS Impact Factor-4.0
Vol.-3; issue-1 (Jan.-March) 2026
Page No- 271-276

©2026 Shodhaamrit
https://shodhaamrit.gyanvividha.com

Author's :

मनोज कुमार पटेल

सहायक शिक्षक, काशीडीह, चंद्रपुर, छत्तीसगढ़.
पीएच.डी. शोधार्थी (हिन्दी), आई.एस.बी.एम.,
विश्वविद्यालय, गरियाबंद, छत्तीसगढ़.

Corresponding Author :

मनोज कुमार पटेल

सहायक शिक्षक, काशीडीह, चंद्रपुर, छत्तीसगढ़.
पीएच.डी. शोधार्थी (हिन्दी), आई.एस.बी.एम.,
विश्वविद्यालय, गरियाबंद, छत्तीसगढ़.

भारतीय भाषाओं के लोक साहित्य में निहित मानवीय मूल्यों का समाजशास्त्रीय एवं सांस्कृतिक विश्लेषण

सारांश : भारतीय लोक साहित्य भारतीय समाज की सामूहिक चेतना, जीवन-दृष्टि तथा सांस्कृतिक मूल्यों का सजीव और प्रामाणिक दर्पण है। यह साहित्य लोकजीवन के अनुभवों, विश्वासों, संघर्षों, आशाओं और आकांक्षाओं से उत्पन्न होकर मौखिक परंपरा के माध्यम से पीढ़ी-दर-पीढ़ी संप्रेषित होता आया है। लोक साहित्य ने सदैव सामान्य जन के जीवन को केंद्र में रखकर सामाजिक यथार्थ को सरल, सहज और प्रभावशाली रूप में अभिव्यक्त किया है। लोकगीत, लोककथाएँ, कहावतें, मुहावरे, लोकनाट्य एवं लोककाव्य भारतीय भाषाओं की समृद्ध परंपरा के अंतर्गत समाज के विविध पक्षों-जन्म, विवाह, श्रम, संघर्ष, उत्सव, शोक और आस्था-को अभिव्यक्त करते हैं।

लोक साहित्य की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता इसमें निहित मानवीय मूल्यों की व्यापकता है। करुणा, सहअस्तित्व, परस्पर सहयोग, नैतिकता, श्रम की गरिमा, नारी सम्मान, सामाजिक न्याय तथा पर्यावरण चेतना जैसे मूल्य लोक साहित्य के केंद्रीय तत्व हैं। लोककथाओं में कमजोर और वंचित वर्ग के प्रति सहानुभूति दिखाई देती है, जबकि लोकगीतों में सामूहिक जीवन, श्रम और सामाजिक एकता का भाव स्पष्ट होता है। नारी पात्रों को लोक साहित्य में केवल पारंपरिक भूमिकाओं तक सीमित न रखकर सृजन, त्याग, साहस और शक्ति के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इस प्रकार लोक साहित्य भारतीय समाज की नैतिक एवं सांस्कृतिक संरचना को सुदृढ़ आधार प्रदान करता है।

प्रस्तुत शोध आलेख का मुख्य उद्देश्य भारतीय भाषाओं के लोक साहित्य में अंतर्निहित मानवीय मूल्यों का समाजशास्त्रीय एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण करना है। अध्ययन में गुणात्मक अनुसंधान पद्धति को अपनाया गया है तथा द्वितीयक स्रोतों-जैसे पुस्तकों, शोध पत्रों, शोध प्रबंधों और संकलित लोक साहित्य-का उपयोग किया गया है। हिंदी, अवधी, भोजपुरी, बंगाली, ओड़िया, मराठी, तमिल आदि भारतीय भाषाओं के लोक साहित्य से चयनित

प्रतिनिधि उदाहरणों का विश्लेषण किया गया है। सामग्री विश्लेषण (Content Analysis) विधि के माध्यम से यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि लोक साहित्य किस प्रकार सामाजिक मानदंडों, नैतिक आचरण और सांस्कृतिक पहचान के निर्माण एवं संरक्षण में योगदान देता है।

शोध निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि लोक साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं है, बल्कि यह सामाजिक समरसता, सांस्कृतिक निरंतरता और नैतिक चेतना के विकास का प्रभावी माध्यम भी है। यह अनौपचारिक शिक्षा का कार्य करते हुए समाज में स्वीकृत मूल्यों और आचरण को सुदृढ़ करता है। आधुनिकता, तकनीकी विकास और वैश्वीकरण के प्रभावों के बावजूद लोक साहित्य आज भी अपनी प्रासंगिकता बनाए हुए है। डिजिटल माध्यमों के माध्यम से लोक साहित्य का पुनर्जीवन यह दर्शाता है कि यह परंपरा समय के साथ स्वयं को अनुकूलित करने की क्षमता रखती है।

अतः यह कहा जा सकता है कि भारतीय लोक साहित्य समकालीन समाज में मूल्य शिक्षा, सामाजिक चेतना और सांस्कृतिक पुनर्जागरण का एक सशक्त स्रोत है। इसके संरक्षण, अध्ययन और शैक्षिक उपयोग के माध्यम से मानवीय मूल्यों को सुदृढ़ कर एक संवेदनशील, नैतिक और समरस समाज के निर्माण की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया जा सकता है।

कुंजी शब्दः लोक साहित्य, भारतीय भाषाएँ, मानवीय मूल्य, समाजशास्त्रीय विश्लेषण, संस्कृति

1. प्रस्तावना : भारतीय सभ्यता विश्व की प्राचीनतम, सतत एवं बहुलतावादी सभ्यताओं में से एक है, जिसकी सांस्कृतिक जड़ें लोक जीवन, जनमानस और पारंपरिक सामाजिक संरचनाओं में गहराई से समाहित हैं। भारत की सांस्कृतिक परंपरा केवल शास्त्रीय या लिखित ग्रंथों तक सीमित न रहकर मौखिक परंपराओं के माध्यम से पीढ़ी-दर-पीढ़ी संप्रेषित होती रही है। इसी मौखिक परंपरा का सशक्त और जीवंत स्वरूप लोक साहित्य है, जो सामान्य जन के जीवन अनुभवों, सामाजिक संघर्षों, धार्मिक आस्थाओं और नैतिक मूल्यों को अभिव्यक्त करता है।

लोक साहित्य को समाज की आत्मा कहा जाता है, क्योंकि इसमें समाज के वास्तविक जीवन की सहज और स्वाभाविक अभिव्यक्ति प्राप्त होती है (Dundes, 2007)। लोकगीत, लोककथाएँ, कहावतें और लोकनाट्य सामाजिक व्यवहार, नैतिकता और सांस्कृतिक चेतना के महत्वपूर्ण स्रोत हैं। आधुनिक परिवर्तनशील परिस्थितियों के बावजूद लोक साहित्य करुणा, सहअस्तित्व, सामाजिक न्याय और श्रम की गरिमा जैसे मानवीय मूल्यों को संरक्षित करता है (Ramanujan, 1991)। अतः भारतीय लोक साहित्य का समाजशास्त्रीय एवं सांस्कृतिक अध्ययन अत्यंत आवश्यक है।

2. साहित्य समीक्षा : लोक साहित्य के अध्ययन में विद्वानों ने इसे समाज की सांस्कृतिक स्मृति, सामूहिक चेतना और सामाजिक संरचना का महत्वपूर्ण वाहक माना है। विलियम बेसकॉम (Bascom, 1965) के अनुसार लोक साहित्य सामाजिक मूल्यों, विश्वासों और व्यवहार प्रतिमानों के संप्रेषण का प्रभावी माध्यम है, जो समाज में नैतिक आचरण और सामाजिक नियंत्रण को सुदृढ़ करता है। एलन डंडेस (Dundes, 2007) ने लोक साहित्य को 'संस्कृति का दर्पण' बताया है, जिसमें समाज की आस्थाएँ, भय और आकांक्षाएँ प्रतीकात्मक रूप में परिलक्षित होती हैं।

भारतीय संदर्भ में हजारीप्रसाद द्विवेदी (1956) ने लोक साहित्य को जनमानस की सहज अभिव्यक्ति माना, जबकि वासुदेव शरण अग्रवाल और रामविलास शर्मा ने इसे भारतीय संस्कृति की आधारशिला स्वीकार किया। ए. के. रामानुजन (1991) के अनुसार भारतीय लोक कथाएँ बहुलतावादी संस्कृति और नैतिक सहअस्तित्व को प्रतिबिंबित करती हैं। गीट्र्ज़ (Geertz, 1973) के सिद्धांत तथा शर्मा (2014) के समकालीन अध्ययन यह स्पष्ट करते हैं कि लोक साहित्य मूल्य-शिक्षा, सांस्कृतिक पहचान और मानवीय मूल्यों के संरक्षण का सशक्त माध्यम है।

3. अनुसंधान उद्देश्य :

1. भारतीय लोक साहित्य में निहित प्रमुख मानवीय मूल्यों की पहचान करना।
2. लोक साहित्य के सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यों का विश्लेषण करना।
3. भारतीय भाषाओं के लोक साहित्य में मूल्यों की बहुलता को समझना।

4. अनुसंधान पद्धति : प्रस्तुत अध्ययन में **गुणात्मक (Qualitative) एवं विश्लेषणात्मक** **(Analytical)** अनुसंधान पद्धति को अपनाया गया है। अध्ययन में **द्वितीयक स्रोतों** का व्यापक उपयोग किया गया है, जिनमें मान्य पुस्तकों, शोध पत्रों, शोध प्रबंधों, पत्रिकाओं तथा संकलित लोक साहित्य से संबंधित ग्रंथों को सम्मिलित किया गया है। इसके अतिरिक्त विभिन्न भाषाई क्षेत्रों में उपलब्ध लोकगीतों, लोककथाओं, कहावतों एवं लोकनाट्यों के संकलनों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। अध्ययन की मुख्य तकनीक के रूप में **सामग्री विश्लेषण (Content Analysis)** को अपनाया गया है, जिसके माध्यम से लोक साहित्य में अंतर्निहित नैतिकता, सामाजिक समरसता, करुणा, सह-अस्तित्व, नारी सम्मान तथा मानवीय संवेदनाओं जैसे मूल्यों की व्याख्या की गई

5. भारतीय लोक साहित्य के रुप

तालिका 1: भारतीय लोक साहित्य के प्रमुख रुप

लोक साहित्य का रुप	उदाहरण	प्रमुख भाषा क्षेत्र
लोकगीत	सोहर, बिरहा	हिंदी, भोजपुरी
लोककथाएँ	पंचतंत्र कथाएँ	संस्कृत, प्राकृत
कहावतें	लोकोक्तियाँ	सभी भारतीय भाषाएँ
लोकनाट्य	नौटंकी, यक्षगान	हिंदी, कन्नड़

6. लोक साहित्य में निहित मानवीय मूल्य : भारतीय लोक साहित्य केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं है, बल्कि यह समाज की नैतिक चेतना, जीवन-दृष्टि एवं मानवीय मूल्यों का सशक्त वाहक है। लोकगीत, लोककथाएँ, लोकोक्तियाँ एवं लोकनाट्य जनसामान्य के अनुभवों से जन्म लेकर सामाजिक आदर्शों को सहज एवं प्रभावी रुप में प्रस्तुत करते हैं। लोक साहित्य में निहित मानवीय मूल्य समाज को नैतिक दिशा प्रदान करने के साथ-साथ सामाजिक संतुलन एवं सांस्कृतिक निरंतरता बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्रमुख मानवीय मूल्यों का विवरण निम्नलिखित है-

6.1 करुणा एवं सहानुभूति : लोककथाओं में कमजोर, वंचित एवं पीड़ित वर्गों के प्रति करुणा और सहानुभूति का भाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। इन कथाओं में प्रायः साधारण पात्रों को नायक के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, जो अन्याय, शोषण एवं अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष करते हैं। इस प्रकार की कथाएँ समाज में मानवीय संवेदना, सहयोग और परोपकार की भावना को सुदृढ़ करती हैं। Bascom (1965) के अनुसार लोककथाएँ सामाजिक मूल्यों के संप्रेषण का प्रभावी माध्यम हैं, जिनके द्वारा समुदाय करुणा एवं नैतिक उत्तरदायित्व जैसे गुणों को पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित करता है।

6.2 सामाजिक समरसता एवं सहअस्तित्व : भारतीय लोकगीतों में जाति, वर्ग, धर्म एवं समुदाय से ऊपर उठकर सामाजिक समरसता और सहअस्तित्व का संदेश निहित है। सामूहिक श्रम, पर्व-त्योहार, ऋतुगीत एवं उत्सवगीत समाज के विभिन्न वर्गों को एक सूत्र में बाँधते हैं। लोकगीतों की सामूहिक प्रस्तुति सामाजिक एकता को सुदृढ़ करती है और परस्पर सहयोग की भावना को बढ़ावा देती है। Ramanujan (1991) के अनुसार लोक साहित्य बहु-सांस्कृतिक समाज में संवाद एवं सामंजस्य का सेतु बनता है, जो सामाजिक विभाजन को कम करने में सहायक होता है।

6.3 नारी सम्मान : लोक साहित्य में नारी को केवल पारंपरिक भूमिका तक सीमित न रखकर उसे सृजन, त्याग, ममता और शक्ति के प्रतीक के रूप में चित्रित किया गया है। अनेक लोककथाओं एवं लोकगीतों में नारी पात्र बुद्धिमत्ता, साहस एवं नैतिक दृढ़ता का परिचय देती हैं। देवी-पूजा से संबंधित लोकगीतों में नारी को शक्ति स्वरूपा के रूप में सम्मान प्राप्त है। Sharma (2014) के अनुसार लोक साहित्य में नारी चित्रण सामाजिक चेतना का दर्पण है, जो स्त्री के सम्मान, आत्मसम्मान एवं सामाजिक योगदान को रेखांकित करता है।

6.4 श्रम की गरिमा : किसान, श्रमिक एवं कारीगरों से संबंधित लोकगीत श्रम की महत्ता और गरिमा को प्रतिष्ठित करते हैं। कृषि गीत, वर्षा गीत एवं पेशागत लोकगीत श्रम को केवल जीविका का साधन न मानकर सामाजिक सम्मान एवं आत्मगौरव से जोड़ते हैं। लोक साहित्य श्रमशील वर्ग के संघर्ष, आशा और सामूहिक प्रयासों को अभिव्यक्त कर सामाजिक समानता की भावना को प्रोत्साहित करता है। इस प्रकार लोक साहित्य श्रम-संस्कृति को सुदृढ़ कर समाज में श्रमिकों के प्रति सम्मान की भावना विकसित करता है।

7. समाजशास्त्रीय विश्लेषण : लोक साहित्य समाजशास्त्रीय दृष्टि से सामाजिक मानदंडों, सामूहिक चेतना तथा नैतिक मूल्यों के संप्रेषण का प्रभावी माध्यम है। यह समाज के अनुभवों, विश्वासों और आचार-विचार को प्रतीकात्मक रूप में अभिव्यक्त करता है। लोकगीत, लोककथाएँ एवं लोकोक्तियाँ समाज द्वारा स्वीकृत आचरण को सुदृढ़ करती हैं तथा अस्वीकार्य व्यवहारों पर नैतिक नियंत्रण स्थापित करती हैं।

Émile Durkheim (1912) के अनुसार समाज की सामूहिक चेतना सामाजिक एकता का आधार होती है, और लोक साहित्य इस चेतना को जीवंत बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। लोक साहित्य अनौपचारिक शिक्षा (Informal Education) का कार्य करता है, जिसके माध्यम से व्यक्ति सामाजिक मूल्यों, कर्तव्यों और उत्तरदायित्वों को सहज रूप से आत्मसात करता है। इस प्रकार लोक साहित्य सामाजिक नियंत्रण (Social Control) का एक सशक्त उपकरण बनकर समाज में संतुलन और अनुशासन बनाए रखने में सहायक होता है।

चित्र 1: लोक साहित्य और समाज के मध्य संबंध (सांकेतिक चित्र)

8. सांस्कृतिक विश्लेषण एवं समकालीन प्रासंगिकता : लोक साहित्य किसी भी समाज की सांस्कृतिक पहचान का मूल आधार है, जो परंपराएँ, रीति-रिवाज, विश्वास और धार्मिक आस्थाओं को संरक्षित और पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित करता है (Geertz, 1973)। यह सांस्कृतिक स्मृति को जीवित रखते हुए समाज को उसकी जड़ों से जोड़ता है और सामाजिक पहचान, सांस्कृतिक निरंतरता एवं मूल्य संरचना को सुदृढ़ करता है। समकालीन

डिजिटल युग में लोक साहित्य नए माध्यमों-सोशल मीडिया, डिजिटल आर्काइव और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म-के माध्यम से पुनर्जीवित हो रहा है। यह स्थानीय पहचान और नैतिक मूल्यों की रक्षा करता है तथा सामाजिक चेतना, सहिष्णुता और सामूहिकता को सुदृढ़ करने का प्रभावी साधन बना हुआ है।

9. निष्कर्ष : प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भारतीय लोक साहित्य केवल सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, बल्कि समाज में निहित मानवीय मूल्यों, नैतिक आदर्शों एवं सामाजिक चेतना का सशक्त संवाहक है। लोक साहित्य करुणा, सहानुभूति, सामाजिक समरसता, नारी सम्मान एवं श्रम की गरिमा जैसे मूल्यों को सहज एवं प्रभावी रूप में संप्रेषित करता है।

समाजशास्त्रीय एवं सांस्कृतिक विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि लोक साहित्य सामाजिक नियंत्रण, अनौपचारिक शिक्षा एवं सांस्कृतिक निरंतरता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। समकालीन डिजिटल युग में भी इसकी प्रासंगिकता बनी हुई है, क्योंकि यह समाज को उसकी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ते हुए मानवीय मूल्यों के संरक्षण एवं संवर्धन में योगदान देता है। अतः लोक साहित्य को सामाजिक एवं शैक्षिक अध्ययन के केंद्र में रखा जाना आवश्यक है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भारतीय भाषाओं का लोक साहित्य मानवीय मूल्यों का अमूल्य भंडार है। यह समाज को नैतिक दिशा प्रदान करता है और सांस्कृतिक एकता को सुदृढ़ करता है। आधुनिक शिक्षा और समाज सुधार में लोक साहित्य की भूमिका को पुनः स्थापित करना आवश्यक है।

संदर्भ :

1. Bascom, W. (1965). The forms of folklore: Prose narratives. *Journal of American Folklore*, 78(307), 3–20.
2. Dundes, A. (2007). *Folklore as a mirror of culture*. Rowman & Littlefield.
3. Durkheim, E. (1912). *The elementary forms of religious life*. Free Press.
4. Geertz, C. (1973). *The interpretation of cultures*. Basic Books.
5. Ramanujan, A. K. (1991). *Folktales from India*. Pantheon Books.
6. Sharma, R. (2014). *Indian folk literature and values*. Oxford University Press.
7. Dorson, R. M. (1972). *Folklore and folklife: An introduction*. University of Chicago Press.
8. Thompson, S. (1951). *The folktale*. Holt, Rinehart and Winston.
9. Narayan, K. (1997). *Mondays on the dark night of the moon: Himalayan folklore*. Oxford University Press.
10. Ben-Amos, D. (1971). Toward a definition of folklore in context. *Journal of American Folklore*, 84(331), 3–15.
11. Bauman, R. (1986). *Story, performance, and event*. Cambridge University Press.
12. Glassie, H. (1995). Tradition. *Journal of American Folklore*, 108(430), 395–412.
13. Honko, L. (2000). Textualization of oral epics. *Oral Tradition*, 15(1), 3–50.
14. Vansina, J. (1985). *Oral tradition as history*. University of Wisconsin Press.
15. Handoo, J. (1998). *Folklore in modern India*. National Book Trust.
16. Elwin, V. (1954). *Folk songs of Chhattisgarh*. Oxford University Press.
17. Blackburn, S. (2005). *Oral epics in India*. University of California Press.

18. Narasimhaiah, C. D. (1996). Indian folklore and cultural identity. *Indian Folklore Research Journal*, 2(1), 1–12.
19. Sinha, S. (2009). Folk traditions and social values in India. *Sociological Bulletin*, 58(2), 221–235.
20. Singh, K. S. (2003). *People of India: An introduction*. Oxford University Press.
21. Mukherjee, A. (2010). Folk culture and social change. *Social Change*, 40(3), 365–378.
22. Nandy, A. (1983). *The intimate enemy: Loss and recovery of self under colonialism*. Oxford University Press.
23. Chakravarti, U. (2006). *Gendering caste: Through a feminist lens*. Sage Publications.
24. Rao, V. N. (1991). *A Ramayana of their own: Women's oral traditions in Telugu*. Oxford University Press.
25. Beteille, A. (2002). *Sociology: Essays on approach and method*. Oxford University Press.
26. Kumar, K. (2005). *Political agenda of education*. Sage Publications.
27. Freire, P. (1970). *Pedagogy of the oppressed*. Continuum.
28. Apple, M. W. (2013). *Education and power*. Routledge.
29. UNESCO. (2003). *Convention for the safeguarding of the intangible cultural heritage*. UNESCO Publishing.
30. Government of India. (2020). *National Education Policy 2020*. Ministry of Education.

•